कविता **निःशब्द.... !!!** - पंकज त्रिवेदी

ज़िन्दगी की तेज़तर्रार रफ्तार में
लोगों की भीड़ में दौड़ता रहता हूं हरदम
शानों-शौक़त है,
भीड़ रहती है ऑगन में
तुलसी का पौधा है और ऑगन में ही गुलाब...

लोग आतें है
ठहाके लगातें है, कुछ है आस लिए
पता नहीं, घर है या मयख़ाना मेरा
नशे में धूर्त रहता हूं, किसी विचार पे

शब्द है और निःशब्द कुछ पल मेरे
बेफ़िक्र हूं, बदनाम भी -
धुआँ उठता है, वक्त ठहरता है
कुछ लम्हें ऐसे भी है, जो देता है सुकुन उन ज़ख़्मों को
जो भरकर भी
उमड़तें है बारबार सैलाब बनकर

निंद उड़ जाती है
ओस बन जातें है अश्क...

कुछ लोग है
मेरे बेचैन दिल को,
ज़ख़्मों को,
ज़हन में भरे उस बारुद को ज़हन- मस्तिष्क/मानसिक
भॉपने का करतें है दावा
मगर, उन्हें भी इ़र है
चले जाते है वो भी
ईसी ऑगन से शब्द लेकर,
निःशब्द होकर
जहॉ तुलसी का पौधा है और गुलाब का फुल भी...!!!

हर्ष, गोकुलपार्क सोसायटी, 80 फूट की सड़क, सुरेन्द्रनगर-363002
मोबाईल : 98795 18811